International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 14-04-2026, Accepted: 15-05-2026, Published: 30-05-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 313-316

मथुरा के श्री कृष्ण जन्मभूमि एवं द्वारिकाधीश मंदिर की स्थापत्य कला एक ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक अध्ययन

नरेन्द्र कुमार[1], यूसुफ अली[2]
[1] शोधार्थी, महाराजा सूरजमल बृज विश्वविधालय, भरतपुर, राजस्थान, भारत
[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, महात्मा ज्योति राव फुले विश्वविधालय, जयपुर, राजस्थान, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhssr.2026.12.2.12213

सारांश
मथुरा, भारत के सप्तपुरियों में से एक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण नगरी है। यह नगरी भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली होने के कारण वैष्णव धर्मावलंबियों का प्रमुख तीर्थस्थल है। इस शोध–लेख का उद्देश्य मथुरा के दो प्रतिष्ठित मंदिरों श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर परिसर एवं द्वारकाधीश मंदिर की स्थापत्य कला का ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है। श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर का ऐतिहासिक महत्व प्राचीन काल से जुड़ा है, जबकि द्वारकाधीश मंदिर 1814 ई. में निर्मित राजस्थानी–हवेली शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। शोध पद्धति में ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक विश्लेषण विधियों का प्रयोग किया गया है, जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों अभिलेख, पुरातात्त्विक साक्ष्य, साहित्यिक स्रोत एवं यात्रा–वृत्तांत का उपयोग किया गया है। प्रमुख निष्कर्षों में दोनों मंदिरों की स्थापत्य शैली, ऐतिहासिक विकास क्रम, धार्मिक कार्य एवं ब्रज संस्कृति में उनके योगदान को रेखांकित किया गया है। दोनों मंदिर मथुरा की सांस्कृतिक विरासत के अभिन्न अंग हैं, जिनका संरक्षण अत्यंत आवश्यक है।

मुख्य शब्द: श्रीकृष्ण जन्मभूमि, द्वारकाधीश मंदिर, स्थापत्य कला, ब्रज संस्कृति, मंदिर वास्तुकला, तुलनात्मक अध्ययन

मथुरा का ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व
मथुरा भारत के प्राचीनतम नगरों में गणनीय है, जिसका उल्लेख रामायण, महाभारत और पुराणों में मिलता है। यह नगरी सप्तपुरियों में से एक है और वैष्णव धर्म का प्रमुख केंद्र रही है। पुरातात्त्विक साक्ष्यों के अनुसार, यहाँ 6ठी शताब्दी ईसा पूर्व से मानव बस्ती के प्रमाण मिले हैं। मथुरा की सामरिक स्थिति व्यापार मार्गों पर होने के कारण यह प्राचीन भारत का एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक केंद्र था। यह नगरी विशेष रूप से मथुरा कला शैली के लिए प्रसिद्ध है, जिसने बौद्ध, जैन एवं ब्राह्मण धर्म की मूर्तियों को आकार प्रदान किया।

भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली होने के कारण मथुरा का धार्मिक महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। महाभारत एवं भागवत पुराण के अनुसार, कंस द्वारा कारागृह में बंद देवकी एवं वसुदेव से भगवान कृष्ण का जन्म यहीं हुआ था। मध्यकालीन काल में चौतन्य महाप्रभु एवं वल्लभाचार्य जैसे संतों की मथुरा यात्रा ने इसकी धार्मिक प्रतिष्ठा को और अधिक बढ़ाया।

ब्रज क्षेत्र में मंदिर स्थापत्य की परंपरा
ब्रज क्षेत्र, जिसमें मथुरा, वृंदावन, गोवर्धन आदि प्रमुख स्थान शामिल हैं, भारतीय मंदिर स्थापत्य की विविध शैलियों का संगम स्थल है। यहाँ की मंदिर कला पर विभिन्न कालों गुप्तकालीन, मध्यकालीन, मुगलकालीन एवं आधुनिक काल का प्रभाव देखने को मिलता है। विशेष रूप से 16वीं शताब्दी के बाद वल्लभाचार्य के पुष्टिमार्गीय संप्रदाय एवं चौतन्य महाप्रभु के गौड़ीय संप्रदाय के प्रभाव से ब्रज क्षेत्र में मंदिर निर्माण की एक नई परंपरा का विकास हुआ।

अध्ययन की आवश्यकता एवं प्रासंगिकता
मथुरा के दो प्रमुख मंदिरों श्रीकृष्ण जन्मभूमि एवं द्वारकाधीश मंदिर का स्थापत्य कला की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। ये दोनों मंदिर भले ही भगवान कृष्ण को समर्पित हों, किंतु इनकी स्थापत्य शैली, ऐतिहासिक विकास एवं सांस्कृतिक परिवेश में उल्लेखनीय अंतर है। श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर परिसर प्राचीन परंपरा, विध्वंस एवं पुनर्निर्माण की गाथा है, जबकि द्वारकाधीश मंदिर 19वीं शताब्दी की राजस्थानी–हवेली शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस अध्ययन के माध्यम से दोनों मंदिरों की स्थापत्य विशेषताओं, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं धार्मिक महत्व का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा।

शोध समस्या एवं परिकल्पना
शोध समस्या: मथुरा के श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर परिसर एवं द्वारकाधीश मंदिर की स्थापत्य विशेषताएँ क्या हैं? इन दोनों मंदिरों की वास्तुकला में क्या समानताएँ एवं असमानताएँ हैं? ब्रज संस्कृति एवं धार्मिक पर्यटन में इन दोनों मंदिरों का क्या योगदान है?

परिकल्पना
1. श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर परिसर की स्थापत्य शैली में प्राचीन परंपरा एवं आधुनिक नागर प्रभाव का सम्मिलन है, जबकि द्वारकाधीश मंदिर राजस्थानी–हवेली शैली का अनुसरण करता है।
2. इन दोनों मंदिरों की धार्मिक कार्यप्रणाली एवं उत्सव परंपराएँ भिन्न हैं, किंतु दोनों ब्रज संस्कृति के अभिन्न अंग हैं।

अध्ययन के उद्देश्य
1. श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर परिसर की स्थापत्य विशेषताओं का विस्तृत अध्ययन करना।
2. द्वारकाधीश मंदिर की स्थापत्य कला का गहन विश्लेषण करना।
3. दोनों मंदिरों की वास्तुकला, ऐतिहासिक विकास एवं कलात्मक अभिव्यक्ति का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
4. ब्रज संस्कृति, धार्मिक पर्यटन एवं सांस्कृतिक विरासत में इन दोनों मंदिरों के योगदान का मूल्यांकन करना।

शोध पद्धति
ऐतिहासिक पद्धति (Historical Method)
इस शोध में ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग किया गया है, जिसके अंतर्गत दोनों मंदिरों के ऐतिहासिक विकास क्रम, निर्माण, विध्वंस

एवं पुनर्निर्माण की घटनाओं का अध्ययन किया गया है। इसके लिए प्राचीन एवं मध्यकालीन अभिलेखों, यात्रा–वृत्तांतों एवं ऐतिहासिक साहित्य का विश्लेषण किया गया है।

तुलनात्मक विश्लेषण पद्धति (Comparative Analysis Method)
दोनों मंदिरों की स्थापत्य विशेषताओं, शिल्पकला, धार्मिक कार्यप्रणाली एवं सांस्कृतिक योगदान की तुलना के लिए तुलनात्मक विश्लेषण पद्धति अपनाई गई है। इसके अंतर्गत विभिन्न तुलनात्मक आधारों जैसे ऐतिहासिक विकास, स्थापत्य शैली, धार्मिक उपयोगिता, कलात्मक अभिव्यक्ति आदि पर दोनों मंदिरों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

स्रोतों का वर्गीकरण
प्राथमिक स्रोत:
- **पुरातात्त्विक स्रोत:** मथुरा में उत्खनन से प्राप्त मूर्तियाँ, शिलालेख एवं भवन अवशेष
- **अभिलेख:** मथुरा से प्राप्त शिलालेख, जिनमें राष्ट्रकूट दान अभिलेख (8वीं शताब्दी) एवं जज्जा का विष्णु मंदिर अभिलेख (1150 ई.) शामिल हैं

द्वितीयक स्रोत:
- **साहित्यिक स्रोत:** महाभारत, भागवत पुराण, तारीख–ए–दाऊदी, तारीख–ए–यमिनी
- **यात्रा–वृत्तांत:** टेवर्नियर (1650) एवं मनुची (17वीं शताब्दी) के विवरण

मथुरा की स्थापत्य परंपरा: एक ऐतिहासिक अवलोकन
प्राचीन मथुरा की कला एवं संस्कृति
मथुरा प्राचीन काल से ही कला एवं संस्कृति का प्रमुख केंद्र रहा है। मथुरा कला शैली ने भारतीय मूर्तिकला को एक विशिष्ट पहचान प्रदान की। यहाँ से प्राप्त कुषाणकालीन मूर्तियाँ, खासकर बुद्ध, महावीर एवं वैष्णव देवताओं की मूर्तियाँ, अपनी उत्कृष्टता के लिए जानी जाती हैं। 6ठी शताब्दी ईसा पूर्व के मृदभांड एवं मूर्तियाँ मथुरा की प्राचीनता के प्रमाण हैं।

वैष्णव धर्म और मंदिर निर्माण
मथुरा में वैष्णव धर्म का विकास गुप्तकाल से प्रारंभ हुआ। सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य (400 ई.) ने यहाँ एक भव्य मंदिर का निर्माण करवाया। 8वीं शताब्दी में राष्ट्रकूटों ने इस स्थल को दान दिया। पुष्टिमार्गीय एवं गौड़ीय संप्रदायों के प्रभाव से 16वीं शताब्दी के बाद ब्रज क्षेत्र में मंदिर निर्माण में वृद्धि हुई।

मध्यकालीन राजनीतिक परिवर्तनों का प्रभाव
मध्यकाल में मथुरा पर कई आक्रमण हुए। 1018 ई. में महमूद गज़नवी ने मथुरा पर आक्रमण कर मंदिरों को नष्ट किया। 16वीं शताब्दी में सिकंदर लोदी ने मंदिरों को विध्वंस किया। सबसे विनाशकारी आक्रमण 1670 ई. में औरंगज़ेब ने किया, जिसने केशवदेव मंदिर को तोड़कर शाही ईदगाह का निर्माण करवाया।

आधुनिक काल में मंदिर पुनर्निर्माण की परंपरा
1804 ई. में मथुरा ब्रिटिश नियंत्रण में आ गया। अंग्रेजों ने कात्रा की भूमि नीलाम कर दी, जिसे बनारस के बैंकर राजा पत्नीमल ने खरीदा। 1935 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने राय कृष्णदास के पक्ष में निर्णय दिया। 1944 में मदनमोहन मालवीय ने जुगल किशोर बिड़ला की सहायता से भूमि का अधिग्रहण किया। 1951 में श्रीकृष्ण जन्मस्थान सेवा संस्थान की स्थापना हुई और 1953–1982 के बीच आधुनिक मंदिर परिसर का निर्माण हुआ।

श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर परिसर की स्थापत्य कला
ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
कृष्ण जन्मस्थल की परंपरा
हिंदू परंपरा के अनुसार, भगवान कृष्ण का जन्म मथुरा में कंस के कारागृह में हुआ था। परंपरा के अनुसार, उनके प्रपौत्र वज्रनाभ ने इस स्थान पर पहला मंदिर बनवाया था। इस स्थल को 'कात्रा केशवदेव' के नाम से जाना जाता था।

विभिन्न कालों में निर्माण एवं पुनर्निर्माण
- **प्राचीन काल:** गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने 400 ई. में मंदिर बनवाया।
- **मध्यकाल:** 1618 ई. में ओरछा के राजा वीर सिंह देव बुंदेला ने लाल बलुआ पत्थर से अष्टकोणीय मंदिर बनवाया।
- **विध्वंस:** 1670 ई. में औरंगज़ेब ने इस मंदिर को नष्ट कर शाही ईदगाह का निर्माण करवाया।
- **आधुनिक निर्माण:** 1953–1982 के बीच वर्तमान मंदिर परिसर का निर्माण हुआ।

स्थापत्य विशेषताएँ
मंदिर परिसर की योजना
श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर परिसर में तीन प्रमुख मंदिर हैं:
1. **केशवदेव मंदिर:** 1957–58 में निर्मित, यह दक्षिण में स्थित है।
2. **गर्भगृह मंदिर:** यह वह स्थान है जहाँ भगवान कृष्ण का जन्म हुआ था। यह एक भूमिगत कारागृह का स्वरूप है, जिसमें संगमरमर का मंडप बना है। शाही ईदगाह इस मंदिर की पिछली दीवार से सटा हुआ है।
3. **भागवत भवन:** इस मंदिर का निर्माण 1965–82 के बीच हुआ।

गर्भगृह का स्वरूप
गर्भगृह मंदिर को कारागृह के स्वरूप में बनाया गया है। यहाँ भगवान कृष्ण की मूर्ति स्थापित है, जिसके पीछे की दीवार शाही ईदगाह से सटी हुई है। यहाँ योगमाया की आठ–भुजाधारी प्रतिमा भी स्थापित है।

स्थापत्य शैली
मंदिर परिसर में आधुनिक नागर शैली का प्रभाव देखने को मिलता है। भागवत भवन के मुख्य मंडप में भित्ति–चित्र (फ्रेस्को) बनाए गए हैं, जिनमें भगवान कृष्ण के जीवन की घटनाओं का चित्रण है। दीवारों पर ताम्रपत्रों पर भगवद्गीता का पाठ उत्कीर्ण है।

पोत्र कुंड
मंदिर परिसर के दक्षिण–पूर्व में पोत्र कुंड (पवित्र कुंड) स्थित है, जिसके बारे में मान्यता है कि इसमें बालकृष्ण का प्रथम स्नान करवाया गया था। इसके सीढ़ीनुमा घाट का निर्माण 1782 ई. में महादजी सिंधिया ने करवाया था।

सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व
जन्माष्टमी उत्सव
श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर में जन्माष्टमी का पर्व अत्यंत धूमधाम से मनाया जाता है। रात्रि 12 बजे भगवान कृष्ण के जन्म का उत्सव मनाया जाता है, जिसमें हजारों श्रद्धालु भाग लेते हैं।

ब्रज तीर्थ परंपरा में स्थान
यह मंदिर ब्रज की चौसठ कोस परिक्रमा का प्रमुख केंद्र है। भगवान कृष्ण के जन्मस्थान का दर्शन प्रत्येक वैष्णव भक्त के लिए परम पुण्य माना जाता है।

द्वारकाधीश मंदिर की स्थापत्य कला

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

निर्माण एवं संरक्षक

मथुरा का द्वारकाधीश मंदिर 1814 ई. में सेठ गोकुलदास पारिख, जो ग्वालियर के कोषाध्यक्ष थे, द्वारा निर्मित करवाया गया था। यह मंदिर भगवान कृष्ण के 'द्वारकाधीश' (द्वारका के राजा) स्वरूप को समर्पित है।

पुष्टिमार्गीय परंपरा से संबंध

द्वारकाधीश मंदिर पुष्टिमार्गीय संप्रदाय से संबद्ध है, जिसके प्रवर्तक वल्लभाचार्य हैं। यह संप्रदाय शुद्धाद्वैत दर्शन पर आधारित है, जिसमें भगवान कृष्ण की कृपा एवं भक्ति पर विशेष बल दिया जाता है।

स्थापत्य विशेषताएँ

राजस्थानी–हवेली शैली

द्वारकाधीश मंदिर राजस्थानी–हवेली शैली में निर्मित है, जो अपनी सुंदरता, अलंकरण एवं स्थापत्य कौशल के लिए प्रसिद्ध है। यह शैली राजस्थानी मंदिरों एवं हवेलियों की विशेषताओं को सम्मिलित करती है।

विशाल प्रांगण एवं स्तम्भ

मंदिर का मुख्य आकर्षण इसके अलंकृत स्तम्भ हैं, जिन पर सुंदर नक्काशी की गई है। इसके झरोखे एवं मेहराब राजस्थानी शैली के प्रभाव को दर्शाते हैं। मंदिर की छत एवं दीवारों पर सुंदर भित्ति–चित्र बने हैं, जिनमें भगवान कृष्ण की लीलाओं का चित्रण है।

तुलनात्मक विवरण

गुजरात स्थित द्वारकाधीश मंदिर की तरह ही मथुरा का यह मंदिर भी स्तंभों एवं अलंकरण की दृष्टि से समृद्ध है। गुजरात के द्वारकाधीश मंदिर की भांति यहाँ भी मोक्ष द्वार एवं स्वर्ग द्वार की परंपरा नहीं है, किंतु दोनों मंदिरों की शिल्पकला में समानता पाई जाती है।

कलात्मक तत्व

चित्रांकन एवं मूर्तिकला

द्वारकाधीश मंदिर की दीवारों पर बने भित्ति–चित्र (फ्रेस्को) अत्यंत आकर्षक हैं। इनमें भगवान कृष्ण के जन्म से लेकर द्वारका प्रस्थान तक की कथाओं का चित्रण है।

सजावटी अलंकरण

मंदिर में पुष्पाकृति अलंकरण, ज्यामितीय डिजाइन एवं पशु–पक्षियों की आकृतियाँ उकेरी गई हैं। स्तंभों की राजस्थानी नक्काशी इस शैली की विशेषता है।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व

झूलन उत्सव एवं जन्माष्टमी

द्वारकाधीश मंदिर में झूलन उत्सव (सावन मास) विशेष रूप से मनाया जाता है। जन्माष्टमी एवं होली के अवसर पर यहाँ विशेष समारोह आयोजित होते हैं।

तुलनात्मक अध्ययन

तुलनात्मक विश्लेषण तालिका

तुलनात्मक आधार	श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर	द्वारकाधीश मंदिर
ऐतिहासिक स्वरूप	प्राचीन परंपरा से जुड़ा (परंपरा: 5000+ वर्ष पुरानी, वर्तमान मंदिर 1953–82)	19वीं सदी का निर्माण (1814 ई.)
स्थापत्य शैली	आधुनिक–नागर प्रभाव, तीन मंदिरों का समूह	राजस्थानी–हवेली शैली
ऐतिहासिक घटनाएँ	विध्वंस (1018, 16वीं सदी, 1670) एवं पुनर्निर्माण	स्थिर इतिहास, किसी विध्वंस का उल्लेख नहीं
प्रमुख आकर्षण	जन्मस्थल (गर्भगृह), पोत्र कुंड, भागवत भवन	भित्ति–चित्र, अलंकृत स्तम्भ, झरोखे
धार्मिक महत्व	जन्मस्थान, ब्रज परिक्रमा का केंद्र	द्वारकाधीश स्वरूप की उपासना, पुष्टिमार्गीय संप्रदाय
शिल्पकला	समकालीन, ताम्रपत्र उत्कीर्णन, फ्रेस्को	राजस्थानी शैली, पुष्पाकृति अलंकरण
संरक्षण स्तर	उच्च (ट्रस्ट प्रबंधन)	उच्च

ऐतिहासिक विकास की तुलना

श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर का इतिहास उतार–चढ़ाव भरा रहा है यह कई बार निर्मित एवं विध्वंसित हुआ, जबकि द्वारकाधीश मंदिर का निर्माण 19वीं शताब्दी में स्थिर परिस्थितियों में हुआ। जन्मभूमि मंदिर की पहचान 'जन्मस्थान' के रूप में है, जबकि द्वारकाधीश मंदिर 'राजा' स्वरूप की उपासना के लिए प्रसिद्ध है।

स्थापत्य शैली की तुलना

जहाँ श्रीकृष्ण जन्मभूमि में आधुनिक नागर शैली का प्रभाव है, वहीं द्वारकाधीश मंदिर पूर्णतः राजस्थानी–हवेली शैली में निर्मित है। दोनों में भित्ति–चित्रों की परंपरा समान है, किंतु शिल्पशैली में अंतर है।

स्थापत्य कला और ब्रज संस्कृति

धार्मिक पर्यटन पर प्रभाव

दोनों मंदिर मथुरा के धार्मिक पर्यटन के प्रमुख आकर्षण हैं। श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर परिसर प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है। द्वारकाधीश मंदिर अपनी कलात्मकता के कारण पर्यटकों एवं कला प्रेमियों के बीच लोकप्रिय है।

सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण

दोनों मंदिर ब्रज की सांस्कृतिक विरासत के अभिन्न अंग हैं। इनकी स्थापत्य कला, उत्सव परंपराएँ एवं धार्मिक अनुष्ठान ब्रज संस्कृति को जीवित रखते हैं।

स्थानीय समाज एवं अर्थव्यवस्था में योगदान

ये मंदिर स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाते हैं तीर्थयात्रियों के आवागमन से होटल, खाद्य, परिवहन एवं अन्य व्यवसायों को लाभ होता है।

संरक्षण की चुनौतियाँ एवं प्रयास

तीर्थ पर्यटन का दबाव

दोनों मंदिरों पर अत्यधिक भीड़ का दबाव है, विशेषकर जन्माष्टमी एवं अन्य त्योहारों पर। इससे मंदिर परिसरों की स्थापत्य क्षति की संभावना बढ़ जाती है।

शहरीकरण एवं पर्यावरणीय प्रभाव

मथुरा का बढ़ता शहरीकरण, वायु प्रदूषण एवं निकटवर्ती निर्माण कार्य मंदिरों की सुंदरता एवं वातावरण को प्रभावित कर रहे हैं। यमुना का प्रदूषण भी एक गंभीर समस्या है।

संरक्षण नीतियाँ

श्रीकृष्ण जन्मस्थान सेवा संस्थान एवं द्वारकाधीश मंदिर प्रबंधन समिति द्वारा मंदिरों के संरक्षण के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) भी इन विरासत स्थलों के संरक्षण हेतु सक्रिय है।

विरासत प्रबंधन की संभावनाएँ

- डिजिटल मानचित्रण एवं 3D मॉडलिंग
- आगंतुक प्रबंधन प्रणाली
- पर्यावरणीय प्रभाव आकलन
- जन जागरूकता अभियान

निष्कर्ष

इस शोध के प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:

पहला, श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर परिसर एवं द्वारकाधीश मंदिर, दोनों ही मथुरा की धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहचान के प्रमुख स्तंभ हैं। दोनों भगवान कृष्ण को समर्पित हैं, किंतु इनका स्थापत्य, इतिहास एवं धार्मिक परिप्रेक्ष्य भिन्न है।

दूसरा, श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर परिसर ऐतिहासिक–धार्मिक निरंतरता का प्रतीक है। इसने अनेक विध्वंस एवं पुनर्निर्माण देखे हैं, जो भारतीय संस्कृति के अदम्य साहस का प्रतीक हैं। वर्तमान मंदिर परिसर आधुनिक नागर शैली में निर्मित है, किंतु इसमें प्राचीन परंपरा एवं पौराणिक घटनाओं का जीवंत चित्रण है।

तीसरा, द्वारकाधीश मंदिर 19वीं शताब्दी की राजस्थानी–हवेली शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है, जो अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति, अलंकरण एवं भित्ति–चित्रों के लिए प्रसिद्ध है। यह मंदिर पुष्टिमार्गीय संप्रदाय की परंपराओं एवं उत्सवों का महत्वपूर्ण केंद्र है।

चौथा, इन दोनों मंदिरों का तुलनात्मक अध्ययन हमें ब्रज की बहुआयामी सांस्कृतिक विरासत को समझने में सहायता करता है। जहाँ एक मंदिर 'जन्म' की अवधारणा पर केंद्रित है, वहीं दूसरा मंदिर 'राज्य ' की अवधारणा को रेखांकित करता है।

अंततः, दोनों मंदिरों का संरक्षण भारतीय सांस्कृतिक विरासत के लिए अत्यंत आवश्यक है। बढ़ते शहरीकरण, पर्यावरणीय प्रदूषण एवं अत्यधिक पर्यटन के दबाव के कारण इन मंदिरों की स्थापत्य सुंदरता एवं ऐतिहासिक महत्व को संरक्षित रखने हेतु त्वरित एवं सतत प्रयासों की आवश्यकता है। यह दायित्व सरकार, संबंधित ट्रस्ट, स्थानीय समाज एवं प्रत्येक भारतीय नागरिक का है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इन अमूल्य विरासत स्थलों का दर्शन एवं अनुभव कर सकें।

संदर्भ

1. Entwistle, A. W. Braj: Centre of Krishna Pilgrimage. Groningen: Egbert Forsten, 1987.
2. Gupta, V. K. Mathura: The Cultural Heritage.
3. Pauwels, H. A Tale of Two Temples: Mathurā's Keśavadeva and Orcchā's Caturbhujadeva. South Asian History and Culture,2011:2(2):278–299.
4. Singh, U. Cults and Shrines in Early Historical Mathura (c. 200 BC–AD 200). World Archaeology,2004:36(3):378–398.
5. Tandon, M., & Sehgal, V. Traditional Indian Religious Streets: A Spatial Study of the Streets of Mathura. Frontiers of Architectural Research,2017:6(4):469–479.
6. Williams, J. The Art of Mathura. New Delhi, 1982.